

भगवान झूलेलाल

भगवान झूलेलाल सिंधी समुदाय के उपास्य देव हैं। हिंदुओं में उदयचंद्र, उडेरोलाल, दरियाशाह, लालसाई, अमरलाल और मुसलमानों में ज़िंदहपीर और लालशाह नाम से प्रसिद्ध है। विभिन्न विद्वानों के मतानुसार भगवान झूलेलाल का जन्म ईसा की दसवीं सदी (सन 951 ईस्वी) में सिंध प्रांत के नसरपुर में हुआ था। यह स्थान आज्ञादी (1947) से पूर्व भारत का एक महत्वपूर्ण प्रांत था। वर्तमान में यह पाकिस्तान के अधीन है।

वर्तमान में भारत एवं विश्व में विभिन्न स्थानों पर बसे सिंधी लोगों द्वारा चैत्र माह के चंद्र दर्शन में चैटीचंड के अवसर पर पड़ने वाले उनके जन्मदिन को पारंपरिक उल्लास से मनाया जाता है। वरुण देवता का अवतार होने के कारण सिंधी लोग भगवान झूलेलाल का लकड़ी का मंदिर जल में रखकर इनके नाम का दीपक जलाते हैं। इस दिन भक्त इस लकड़ी के मंदिर को अपने शीश पर उठाकर शोभा यात्रा निकालते हैं, जिसे बहिराणा साहब कहा जाता है। इस दौरान छेज नृत्य के साथ भगवान झूलेलाल पर महिमा गीत गाए जाते हैं। शाम को गणेश विसर्जन की तरह बहिराणा साहब को किसी नदी या जलाशय में विसर्जित कर देते हैं। इस अवसर पर ताहिरी (मीठे चावल), उबले नमकीन चने और शरबत का प्रसाद बांटा जाता है।



सिंध का तत्कालीन अरबी शासक मिर्खशाह तानाशाह होने के साथ-साथ कट्टरपंथी विचार का था। दिन प्रतिदिन उसके बढ़ते जुल्मों से सिंध की हिंदू प्रजा परेशान हो चुकी थी। उनकी मदद करने वाला कोई नहीं था। अतः हिंदू-समुदाय सिंधु नदी के तट पर एकत्र होकर इस कठिन घड़ी से निकालने के लिए वरुण देवता से प्रार्थना करने लगा। तत्पश्चात आकाशवाणी हुई कि भगवान झूलेलाल का जन्म माता देवकी व पिता रतनराय लोहानी के घर पर होगा जो प्रजा को मिर्खशाह के अत्याचारों से मुक्ति दिलायेंगे।

धीरे-धीरे समय बीतने लगा और एक दिन रतनराय के घर एक बालक का जन्म हुआ। बालक का नाम उडेरोलाल रखा गया। यह विचित्र शिशु था, जो दूध नहीं पी रहा था। इसी बीच जब माँ ने शिशु के मुख को अपनी उंगलियों से खोला तो उन्हें बालक के मुख के अंदर जलचरों से युक्त समुद्र के दर्शन हुए जिसमें बैठे हुए एक श्वेत दाढ़ी वाले देवता 'वरुणदेव' जल को प्रवाहमान करते दिखाई दिए। फिर माता देवकी मधुर नैवेद्य बनाकर वरुण देवता की पूजा के लिए समुद्र तट पर गयीं। पूजा के पश्चात प्रसाद रूप में प्राप्त सागर जल की एक बूंद को उन्होंने बालक के मुख में डाला तो बालक माँ का दूध पीने लगा। जब मिर्खशाह के अत्याचार से पीड़ित हिंदुओं को भगवान झूलेलाल के जन्म का समाचार मिला तो सभी खुशी से नाच उठे।

कालांतर में उन्होंने अपनी चमत्कारी लीलाओं द्वारा मिर्खशाह की दुष्प्रवृत्तियों का शमन कर उसे एक अच्छा इंसान बना दिया। इसके बाद मिर्खशाह उनका परम शिष्य बन गया और जनता के कल्याण हेतु कार्य करने के साथ-साथ उनके उपदेशों को जन-जन में पहुंचाने का कार्य भी करने लगा। सभी धर्मानुरागी लोगों के कष्टों को दूर कर उन्होंने संपूर्ण मानव समाज को उचित कर्म की शिक्षा, सर्वधर्म समभाव, प्रेम और भाईचारे का विलक्षण संदेश दिया।

भगवान झूलेलाल के संदेश-

- ईश्वर अल्लाह एक है।
- विकृत धर्माधता, घृणा, ऊंच-नीच और छुआछूत की दीवारें तोड़ो और अपने हृदय में मेल-मिलाप, एकता, सहिष्णुता, भाईचारा और धर्मनिरपेक्षता के दीप जलाओ।
- सब जगह खुशहाली हो।
- सृष्टि एक है, हम सब एक परिवार हैं।

भगवान झूलेलाल ने ईश्वर के एकत्व का जो संदेश दिया वह वर्तमान परिवेश में बहुत प्रासंगिक है । भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में जहां विभिन्न पंथ, सम्प्रदाय और धर्म के लोग निवास करते हैं, उस देश की प्रगति के लिए सामाजिक एकता अत्यंत महत्वपूर्ण है । सामाजिक एकता को बढ़ावा देने हेतु भारतीय डाक विभाग द्वारा दिनांक 17 मार्च 2013 को भगवान झूलेलाल की स्मृति में डाक टिकट जारी किया गया ।

अभ्यास-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. भगवान झूलेलाल का जन्म कहां हुआ था ?
2. भगवान झूलेलाल को किसका अवतार माना जाता है ?
3. भगवान झूलेलाल के माता-पिता का नाम लिखिए ?
4. भगवान झूलेलाल ने सिंध प्रांत की हिंदू प्रजा को किसके अत्याचारों से मुक्ति दिलायी ?
5. भगवान झूलेलाल द्वारा दिए गए उपदेशों को अपने शब्दों में लिखिए ।